पीएच0डी0 पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रारूप

कार्तिक उराँव की राजनीतिक एवं सामाजिक उपलब्धियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: झारखण्ड के विशेष संदर्भ में

सामाजिक विज्ञान संकाय
राजनीति विज्ञान विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशिका
डॉ0 स्मिता किरण टोप्पो
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
रामलखन सिंह यादव, महाविद्यालय
कोकर, राँची

शोधार्थी
प्रीति कुमारी
राजनीतिक विज्ञान विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

कार्तिक उराँव की राजनीतिक उपलब्धियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: झारखण्ड के विशेष संदर्भ में

शोध विषय की अद्‌यतन स्थिति:

आजादी के लड़ाई के बाद आदिवासी अपनी आवाज ढूँढ रहे थे कार्तिक उराँव उनकी आवाज बने। राजनीतिक तौर पर कहा जा सकता है कि अगर कार्तिक उराँव को किसी धर्म का समर्थक व किसी पक्ष का विरोधी समझेंगे, तो यह कभी न्यायोचित नहीं होगा क्योंकि कार्तिक उराँव आदिवासी के ही नहीं अपितु संपूर्ण समाज के मार्गदर्शक थे।

कार्तिक उराँव ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा तात्कालिन बिहार के गुमला जिले और पटना से पूरी की। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने इंग्लैण्ड जाकर अभियांगिकी की पढ़ाई की और कई डिग्रीयाँ अपने नाम की।

1959 ई0 में दुनिया के सबसे बड़े ऑटोमेटिक पॉवर स्टेशन का प्रारूप ब्रिटिश सरकार को दिया था, जो आज हिंकले न्यूक्लियर पॉवर प्लांट के नाम से विद्‌यमान है। उसकी डिजाइनिंग टीन में वे शामिल थे। जवाहरलाल नेहरू के कहने पर कार्तिक उराँव राजनीति में आए थे। वे तीन बार लोहरदगा से 1967, 1971, 1980 सांसद बने व एक बार विशुनपुर क्षेत्र से 1977 में विधायक रहे। आदिवासियों के जमीन लूटने से बचाने के लिए सबसे पहला आंदोलन कार्तिक उराँव ने किया था। उन्हीं के प्रयास से 1968 में इंदिरा गाँधी सरकार ने ‘‘भूमि वापसी अधिनियम ’ बनाया था। बिरसा कृषि विश्वविद्‌यालय की स्थापना में इनका बहुत योगदान रहा। कार्तिक उराँव ने आदिवासियों के धर्मान्तरण का प्रखरता से विरोध किया। ये आदिवासियों को सनातन धर्म के अंग मानते थे। इसलिए उन्हें एकमात्र हिन्दू आदिवासी प्रमुख कहा गया।

छोटानागपुर क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध में ये जितने मुखर हुए वह अविस्मरणीय है। 1962 के आम चुनाव में ये कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े और हार गए। 1964 में पंडित नेहरू का निधन हो चुका था। लेकिन 1967 के आम चुनाव में ये सांसद बन गए। इंदिरा गाँधी ने उन्हें उपमंत्री का पद देना चाहा किन्तु

प्रतिष्ठा के प्रश्न पर इन्होंने अस्वीकार कर दिया। 1972 में भी इसी तरह की स्थिति बनी रही।

1977 के चुनाव में कार्तिक उराँव सांसद नहीं बन सके लेकिन गुमला के विशुनपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक बन गये। 1980 के चुनाव में पुनः सांसद बनकर आए। इस बार उन्हें केन्द्रीय पर्यटन एवं नागरिक विमानन सह मंत्री बनाया गया। पुनः 8 जून 1980 को केन्द्रीय संचार राज्य मंत्री बनाया गया। उनके प्रयास से आदिवासियों के विकास और कल्याण के लिए 'आदिवासी उपयोजना' अस्तित्व में आई उनके प्रयासों से 1972 में राँची में पटना उच्च न्यायालय की एक अस्थाई पीठ और 1976 में राँची में एक स्थायी पीठ स्थापित की गयी।

उराँव आदिवासियों की पड़हा व्यवस्था को कार्तिक उराँव ने पुर्नजीवित किया ताकि छोटानागपुर के आदिवासी अपने विवाद को स्वयं सुलझा सकें। अखिल भारतीय आदिवसी विकास परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के सामने आदिवासियों की शिक्षा के लिए प्रस्ताव रखा तो उन्होंने उसे स्वीकार किया।

कार्तिक उराँव ने पूरे आदिवसी समाज के शैक्षणिक और सांस्कृतिक उत्थान के साथ-साथ सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ने के लिए अथक प्रयास किए। आदिवासियों के विचारों, विचारधाराओं और सपनों को लेकर अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद् की स्थापना 6 मार्च 1968 को हुई थी। वर्तमान में भारत के सभी राज्यों में इसकी शाखाएँ है। इस परिषद् के कई उद्देश्य है। जिनमें देश के जनजातिय लोगों के बीच हर तरह से सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को प्रभावी ढंग से स्थापित करना तथा जनजातिय धर्म संस्कृति, परंपराओं और भाषाओं को बढ़ावा देना और संरक्षित करना साथ ही साथ आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों आदिवासियों के हितों, विशेषाधिकारों की रक्षा, सामाजिक कल्याण, शैक्षणिक व्यवस्था एवं सामाजिक संस्थाएँ खोलना कार्तिक उराँव के प्रयास से ही अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद् की विभिन्न शाखाएँ अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो रही है।

आज भी कार्तिक उराँव आदिवासियों के मसीहा, छोटानागपुर के काला हीरा, बाबा, कार्तिक उराँवा आदि के रूप में जाने जाते हैं। एक सच्चे देश भक्तख्

विद्वान, प्रखर प्रवक्ता और सच्च समाज सेवी थे। जब वह संसद में अपनी बाते बोलते थे तो सभी बड़े ध्यान से उनकी बाते सुनते थे। कार्तिक उराँव ने कृषि और विज्ञान, परंपरा और आधुनिक दोनों को साथ लेकर चलाना चाहा था।

झारखण्ड राज्य को प्रगति के पथ पर बढ़ाना है तो जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान के मंत्र के साथ आगे बढ़ना होगा और इन तीनों का मिश्रण कार्तिक उराँव में देखने को मिलता है। जिसे वर्तमान झारखण्ड राज्य के विकास के संदर्भ में साकारात्मक रूप में अपनाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा:

इस विषय के गहन अध्ययन के लिए इन पुस्तकों का अवलोकन किया है।

1. डॉ. राम कुमार तिवारी, (2004) ने अपनी पुस्तक 'झारखण्ड की रूप रेखा' में उनकी जीवनी और कार्यों का वर्णन किया है। उन्होंने बताया है कि कार्तिक उराँव का जन्म भले ही गुमला भारत में हुआ लेकिन अंग्रेजों के विरोध में स्वतंत्रयोत्तर झारखण्ड में ये जितने मुखर हुए वह अविस्मरणीय है।

2. डॉ. कार्तिक उराँव (1970) में अपनी पुस्तक 'बीस वर्ष की काली रात' में लिखा है- अनुसूचित जाति/जनजातियों को सदियों से परिभाषित किया जाता रहा है और उन्होंने सदा से ही दावा किया कि अनुसूचित जातियों/जनजातियों में हिन्दू धर्म मानने वाली जातियाँ ही रहेगी जो हिन्दू को छोड़कर किसी अन्य धर्म को मानता हो, वह अनुसूचित जाति/जनजाति का सदस्य नहीं समझा जाएगा। देश की आजादी के लगभग 20 वर्षों के बाद जंगलों एवं पहाड़ों के बीच रह रहे आदिवासियों के बारे में भारत देश की जनता एवं सरकार के समक्ष समाज की दुर्दशा तथा संवैधानिक अधिकारों की उपेक्षा के शिकार दबे-कुचले लोगों की आवाज को शिखर तक पहुँचाने तथा रौशनी दिखाने का कार्य उनके द्वारा किया गया है।

3. एस. के. आजाद (2020) ने अपनी लेख ''वनवासी अस्मिता की बुलंद आवाज' में लिखा है कि कार्तिक उराँव' के स्वर्गवासी हो जाने पर भी आज वे हमारे साथ हमारे विचारों में है। उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व हमारे

बीच हम सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे। वे भारत के सनातन धर्म परम्पराओं पर विश्वास रखते हैं और भारतीय जनजाति समाज के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

4. रायनन्द साहू, (2016) ने अपनी पुस्तक ''आदिवासी धर्म एवं संस्कृति के अग्रदूत: कार्तिक उराँव' में कार्तिक उराँव की पारिवारिक स्थिति से लेकर उनके योगदान तक का वर्णन किया है। लेखक ने बताया है कि कार्तिक उराँव ने पूरे भारत के आदिवासियों को अपनी परंपरा, रीति-रिवाजो, कला-संस्कृति, धार्मिक विश्वास आदि के प्रति सजग रहने तथा आत्म सम्मान आत्म विश्वास एवं ऊँचे मनोबल के साथ जीने की प्रेरणा दी। लेखक ने उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं एवं उपलब्धियों को भी शामिल किया है।

5. विवेकानंद नरताम (2021) में अपनी लेख ''स्वर्गीय कार्तिक उराँव जी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में बताया है कि कार्तिक उराँव हजारो वर्षों से वनों में रहने वाले जनजाति समाज में जन्मे। कार्तिक उराँव का अनन्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व पीढ़ियों तक हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। उन्होंने जनजाति समाज के विकास एवं उसमें आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अथक प्रयास किये एवं भारत के जनजातिय समाज के उत्थान के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे। धर्म एवं संस्कृति की बाहरी आघातों से रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे।

6. डॉ. शिवजी गौतम (2016) ने अपनी पुस्तक ''कार्तिक उराँव: अ नेशनल लीडर ऑफ झारखण्ड' में उनकी जीवनी लिखी गई है जिसमें यह बताया गया है कि कि वे सत्तर के दशक में उभोगतंत्रवादी से राजतनेता बनने की ओर अग्रसर हुए। झारखण्ड के गुमला जिले के मूल निवासी, कार्तिक उराँव ने अपनी मृत्यु तक 1981 तक भारत के आदिवासी लोगों के लिए बहुत ईमानदारी से काम किया।

उपर्युक्त लेखकों एवं शोधकर्त्ताओं ने महान भारतीय जनजाति नेतृत्वकर्त्ता कार्तिक उराँव पर उल्लेखनीय कार्य किए है। विद्वानों द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं उनकी उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है। अब तक कार्तिक उराँव की धर्म एवं संस्कृति के भी विचारों का उल्लेख किया गया है लेकिन अभी भी

कुछ कार्यों पर विचार करने की आवश्यकता है। इसी तरह कार्तिक उराँव की समाज के प्रति कुछ विचारों एवं शैक्षणिक देन की ओर कोई खास कार्य नहीं हुए हैं। कार्तिक उराँव की संसदीय एवं विद्‌यायी उपलब्धियों पर भी अभी भी कुछ विशेष कार्य नहीं हुए है। झारखण्ड राज्य के निर्माण में कार्तिक उराँव की भूमिका का वर्णन ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले इस महानायक के कार्यों का वर्णन करना इस शोध का प्रमुख विषय है। प्रस्तावित शोध अध्ययन में झारखण्ड राज्य के निर्माण में कार्तिक उराँव के कार्यों एवं उनकी संसदीय विधायी, उपलब्धियों को प्रस्तुत करने की कोशिश करेगा।

अनुसंधानिक कार्‌य की समस्या:

प्रस्तुत अनुसंधान के अध्ययन हेतु कुछ समस्याएँ इस प्रकार है-

1. कार्तिक उराँव ने झारखण्ड के सामाजिक क्षेत्र में क्या-क्या कार्य किए है और उनका योगदान कितना रहा है?
2. कार्तिक उराँव ने झारखण्ड आंदोलन के लिए क्या-क्या प्रयास और कार्य किए?
3. कार्तिक उराँव का झारखण्ड और भारत की राजनीति में क्या योगदान रहा है?

अनुसंधान कार्य का उद्देश्य एवं अभिप्रेरणा:

कार्तिक उराँव पर अभी तक अध्ययनकर्त्ताओं ने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई है। जिन्होंने उनके बारे में लिखा है उनका अध्ययन कार्तिक उराँव के जीवन के कुछ पहलुओं तक ही सीमित रह गया है, वे कार्तिक उराँव के संपूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन उतनी महत्ता से नहीं कर पाए हैं। कार्तिक उराँव का राजनीतिक व्यक्तित्व गौण रह गया है। झारखण्ड के निवासी होने और राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययनकर्त्ता के रूप में झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानियों और नेतृत्व कर्त्ताओं का अध्ययन करना मुझ जैसे शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है और वर्तमान समय में कई ऐसे नेतृत्वकर्त्ता है जिनकी जानकारी समाज को और विशेषकर युवाओं को नहीं है। नेतृत्वकर्त्ताओं के विषय में अध्ययन करने की आवश्यकता ने मुझे इस विषय के चयन के लिए प्रेरित किया है। प्रस्तुत शोध

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में कार्तिक उराँव की संपूर्ण जीवन यात्रा और समाज के प्रति उनकी देन को उजागर करेगा।

उपकल्पना:

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है-

1. **कार्तिक उराँव की राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ है।**
2. **कार्तिक उराँव सफल राजनेता के साथ-साथ झारखण्ड आन्दोलन के सूत्रधार भी रहे है।**

अनुसंधान प्रारूप एवं शोध पद्धति:

प्रस्तावित शोध प्रबंध को वर्णनात्मक पद्धति से पूर्ण किया जाएगा। इसमें ऐतिहासिक एवं पुस्तकालय विधि के साथ-साथ द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग भी किया जाएगा।

तथ्य संकलन के लिए उपयोग किये जाने वाले उपकरण:

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़े प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त किए जाएगें। प्राथमिक स्रोत से आंकड़े संग्रहित करने हेतु कार्तिक उराँव के परिवार वालों से उनकी सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी साक्षात्कार विधि द्वारा एकत्रित किए जाएगें इससे उनके कार्य क्षेत्र से जुड़े 50 **लोगों से अनुसूची एवं साक्षात्कार प्रणाली द्वारा सूचनाओं को एकत्रित किया जाएगा। इनका चयन स्तरित निदर्शन द्वारा किया जाएगा। इसमें से** 20 **राजनीतिक, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं** 20 **सामान्य लोगों तथा** 10 **परिवार से जुड़े लोगों से जानकारी एकत्रित किये जाने की योजना है। तत्पश्चात् कार्तिक उराँव के कार्यों, उनके जीवन से सबंधित पत्र-पत्रिकाओं एवं क्रिया-कलापों के अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकालयों अभिलेखागारों से पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, रिपोर्टस, गजेटियर आदि का अध्ययन किया जाएगा। प्राप्त शोध तथ्यों की विश्लेषण को अन्तर्वस्तु द्वारा पूर्ण किया जाएगा।**

प्रस्तावित शोध के लिए इस प्रकार अध्यायीकरण किया गया है-

प्रथम अध्याय	**:**	**जीवन परिचय**
द्वितीय अध्याय	**:**	**कार्तिक उराँव की सामाजिक उपलब्धियाँ**
तृतीय अध्याय	**:**	**झारखण्ड आंदोलन में कार्तिक उराँव का योगदान**
चतुर्थ अध्याय	**:**	**केन्द्र, बिहार और झारखण्ड के प्रति कार्तिक उराँव का दृष्टिकोण**
	:	**निष्कर्ष एवं सुझाव**

शोध अध्ययन का महत्व:

सामान्यतः कार्तिक उराँव के व्यक्तित्व को एक अलग महत्व नहीं मिल पाया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध कार्तिक उराँव के जीवन और कार्यों से संबंधित विविध पक्षों का अध्ययन कर उनके व्यक्तित्व का सही विवरण प्रस्तुत करेगा।

इस शोध प्रबंध द्वारा उनके द्वारा किये गए सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक विकास कार्यों की जानकारी मिलेगी जो अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। उनकी उपलब्धियों को शोध के माध्यम से आंकलित कर जन-जन तक पहुँचाना इस शोध की सार्थकता को सिद्ध करेगा।

वर्त्तमान समस्याओं के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता एवं सामाजिक अपेक्षाएँ:

वर्त्तमान समय में युवा पीढ़ी सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में निःस्वार्थ रूप से कार्य नहीं कर पा रही है। कार्तिक उराँव के इस शोध प्रबंध के द्वारा उन युवा पीढ़ी को भी सामाजिक एवं अन्य विकास कार्यों के लिए निःस्वार्थ रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

वर्त्तमान ज्ञान में इसका योगदान:

राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र निरंतर अनुसंधान से विकसित होता रहा है। यह अनुसंधान भी कुछ ऐसे तथ्यों को उजागर करेगा जो झारखण्ड के महान् व्यक्तियों में एक महान् भारतीय जनजाति नेतृत्व कर्त्ता श्री कार्तिक उराँव की कृति को समृद्धिता प्रदान करेगा। अतः इस अनुसंधान के माध्यम से राजनीति के क्षेत्र में नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।

भविष्य के कार्य:

प्रत्येक शोध की कुछ अपनी विशेषताएँ एवं सीमाएँ होती है। यह अनुसंधान की जिन प्रश्नों पर केन्द्रित है उन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान के निष्कर्ष से सामने आयेंगे। बहुत सारे अनुत्तरित नए प्रश्न का उभरना स्वभाविक है। इस शोध से प्रेरणा प्राप्त कर कोई भी शोधार्थी अपने इस शोध विषय से जुड़े समस्याओं का जो नए प्रश्न अनुसंधान के निष्कर्ष से उत्पन्न होगें उस पर भविष्य में कोई अनुसंधान कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आजाद, एस. के., (2020) वनवासी अस्तिमा की बुलंद आवाज, बाबा कार्तिक उराँव, राँची झारखण्ड विश्व संवाद केन्द्र
2. उराँव, कार्तिक, (1970), बीस वर्ष की काली रात, नई दिल्ली, पायनियर प्रिंटर्स
3. गौतम, शिवाजी, (2016), Kartik Oraon - A natioanl Leader of Jharkhand, दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस
4. तिवारी, कुमार राम, (2004), झारखण्ड की रूपरेखा, पटना, बिहारी हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी
5. नरताम, विवेकानंद, (2021), स्वर्गीय कार्तिक उराँव: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्यामलाल महाविद्यालय
6. साहू, रामनन्द, (2019), आदिवासी धर्म व संस्कृति के अग्रदूत कार्तिक उराँव, न्यू दिल्ली, पृथ्वी प्रकाशन 126, विद्या बिहार रोहतक रोड, न्यू दिल्ली
7. मिंज, कोरने लियुस (2022), उराँव साहित्यकार राँची, झारखण्ड झरोखा
8. रॉय, शरत चंद्र (1928), उराँव धर्म और रीति-रिवाज, कलकत्ता, राँची
9. द्विवेदी, कुमार राजेश, (2018), संस्कृत धर्म, नये पल्लव पब्लिकेशन
10. रघवंश कमलेश, (2013), और कितना वक्त चाहिए झारखण्ड को?, राँची दैनिक जागरण
11. भूषण, विभा, (2023), कलम को तीन होने दो, नई दिल्ली, ग्रंथ अकादमी, प्रभात प्रकाशन
12. गिरिराज, गौंझू राम गिरिधारी, (2018), झारखण्ड आंदोलन के जनक मरङ गोमके जयपाल सिंह, न्यू दिल्ली, स्पेश पब्लिशिंग हाऊस
13. जसरा, एम.एस., (2005), लाल बहादुर शास्त्री अविस्मरणीय जीवन प्रसंग न्यू दिल्ली, पब्लिकेशन डिविजन

14. **उराँव**, **करमा**, (2005) **प्रभात खबर**

https://wpaper,prabhat-khabar.com/

15. **साहू**, **रायनन्द**, (2019) **आदिवासी धर्म व संस्कृति के अग्रदूत कार्तिक उराँव**, **पृथ्वी प्रकाशन** 126, **विद्‍या बिहार रोहतक रोड**, **न्यू दिल्ली**

16. **गौतम**, **शिवाजी**, (2016) Kartik Oraon-A National Leader of Jharkhand **दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस**

17. **एक्का**, **बहुरा**, 8 **दिसम्बर**, 2007, **प्रभात खबर**

https://epaper,prabhat-khabar.com/